International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 134-135

प्रेमचंद के साहित्य में नारी का शोषित रुप

संजय कुमार

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरयाणा, भारत।

प्रस्तावना

साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज की वास्तविक स्थिति का ज्ञान साहित्य द्वारा होता है। प्रेमचंद जी नारी मनोविज्ञान के जानकार थे। उनके साहित्य की नारी–पात्र एक वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व करती है। नारी शतब्दियों से शोषिता का जीवन जीती रही है। जन्म से ही उनके साथ भेदभाव होता है। पिता के घर व पति के घर वह उपेक्षिता का जीवन ही जीती आई है। पति की मृत्यु के उपरांत पुत्रों के द्वारा भी उसे उचित आदर नहीं मिलता। पुत्रों के द्वारा भी वह शोषिता का जीवन व्यतीत करती आई है।

प्रेमचंद जी नारी के शोषण की पूरी जिम्मेदारी पुरूष प्रधान सामाजिक व्यवस्था व पुरूष की वासनात्मक कामुक प्रवृति को मानते थे। वे भारतीय विधवा के दारुण व यातनामय जीवन से भलीभंति परिचित थे। वे विधवा समस्या को वेश्या का एक कारण मानते थे। उन्होनें इस समस्या के उन्मूलन के उपाय भी बताए हैं। उच्च व निम्न वर्ग की महिलाओं की अपेक्षा मध्यवर्ग की महिलाएं शोषण का अधिक शिकार होती है। मध्यमवर्ग की महिलाओ को धार्मिक रूढ़ियों व अंधविश्वासों के कारण शोषित जीवन व्यतीत करना पड़ता है। वैधव्य जीवन का शोषण ही विधवाओं को वेश्या जीवन की ओर अग्रसर करता है। वेश्या एक भीषण सामाजिक समस्या है। जिन वेश्याओं का समाज तिरस्कार करता है उनके प्रति प्रेमचंद जी पूर्ण सहानुभूति रखते हैं। प्रेमचंद जी अशिक्षा, पारिवारिक कलह, आर्थिक अभाव, अनमेल विवाह, रूढ़िवादी सामाजिक व्यवस्था, पुरूष की नारी के प्रति भोगवादी दृष्टि को मुख्यतः वेश्या–समस्या का जनक मानते हैं। प्रेमचंद का विश्वास है कि नारी सतीत्व की रक्षा के लिए प्राणों की बाजी लगाने से भी पीछे नहीं हटती। कोई स्त्री वेश्या का रूप तभी अपनाती है जब समाज में उसके लिए बाकी सारे रास्ते बंद हो गए होते हैं। विधवाएं स्वैच्छा से वेश्या नहीं बनती। वे सारे अपमान व तिरस्कार झेलती है। पुरूष ही विषम परिस्थितियों के कारण उत्पन्न हुई उनकी विवशता का अनुचित लाभ उठाता है। प्रेमचंद जी ने वेश्याओं के साथ–साथ उनकी संतानों को मिलने वाली उपेक्षा व तिरस्कार का भी अंकन बड़ी मार्मिकता के साथ किया है। उनके साथ होने वाला अमानवीय व्यवहार सभ्य समाज के लिए अशोभनीय व निंदनीय है।

प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य में नारी के विभिन्न शोषित रूपों का अंकन किया है। नारी अनेकों प्रकार से शोषित होती हैं। इन रूपों में से शारीरिक शोषण नारी के लिए भीषण त्रासदी होता है। यह किसी भी सभ्य समाज के लिए अत्यंत घृणित है कि सृष्टि की निर्मात्री नारी को देह–व्यापार करना पड़े फिर भी गणिकाओं और देवदासियों के रूप में वेश्या–प्रथा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। मंदिरों में अभिभावकों द्वारा देवदासी बनी युवतियां पंडे–पुजारियों के यौन–शोषण का शिकार ही बनती थी जबकि वे रूढ़िवादी धर्मों के लिए आदर व श्रद्धा की पात्र थी। ग्रामीण क्षेत्रों में वेश्यावृत्ति अधिक प्रचलित नहीं है। चोरी–छिपे ग्रामीण घरों में दो चार उदाहरण भले ही मिल जाएं परंतु खुलेआम वेश्यावृत्ति की स्थापना शहरों में ही मिलती है। गांवों के नैतिक मापदंड शहरों के नैतिक मापदंडों की अपेक्षा भिन्न है। शहर की नारी को गांव की नारी की अपेक्षा अधिक मानसिक व शारीरिक यंत्रनाओं से गुजरना पड़ता है। शहर की नारी की अपेक्षा गांव की नारी उतनी आर्थिक गुलाम नहीं है कि आवश्यकता पड़ने पर अपनी जीविका की समस्या हल न कर सके। गांवो में नारी द्वारा अर्थोपार्जन को बुरा नहीं माना जाता और इसी कारण पुरूष की चारिरत्रिक दुर्बलता व कामुकता का शहर की नारी की अपेक्षा शिकार होने से बची रह सकती हैं। प्रेमचंद जी ने नारी के विभिन्न शोषित रूपों में से मुख्यतः उसके शारीरिक–शोषण को अंकित किया है। नारी का शारीरिक शोषण उसकी अस्मिता पर भीषण प्रहार होता है। उसके अस्तित्व को ही छिन्न–भिन्न करता है। अतः नारी के विभिन्न शोषित रूपों का अंकन किया गया है।

इस शोषण का एक कारण प्रेमचंद जी दहेज को मानते हैं। वे कहते हैं– " दहेज बुरा रिवाज है, बेहद बुरा।"[1] इसी के कारण लोग पुत्री का जन्म अशुभ मानते है। दहेज की चिंता माता–पिता को पुत्री के जन्म से ही होने लगती है। कन्या को वस्तु ही मानकर उसका दान अर्थात् कन्यादान किया जाता है। "लेन–देन से वर और कन्या दोनों ही के घर वाले जेरबार होते है।"[2]

नारी शोषण का एक अन्य कारण दरिद्रता भी है। "दरिद्र विधवा के लिए इससे बड़ी और क्या विपत्ति हो सकती है कि जवान बेटी सिर पर सवार हो? लड़के नंगे पांव पढ़ने जा सकते है, चौका–बर्तन भी अपने हाथ से किया जा सकता है, रुखा–सूखा खाकर निर्वाह किया जा सकता है, झोपड़े में दिन काटे जा सकते है, लेकिन युवती कन्या घर में नहीं बिठाई जा सकती।"[3]

नारी अनेक प्रताड़नाओं को सहन करते–करते अंत में वेश्या के रुप में जीवन–निर्वाह करती है। जब सारे दरवाजे बंद हो जाते है तो वह इस घृणित रुप को धारण करती है। प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य के द्वारा समाज सुधारने का भरसक प्रयास किया है– "हमें उनसे घृणा करने का कोई अधिकार नहीं है। यह उनके साथ घोर अन्याय होगा। यह हमारी ही कुवासनाएं, हमारे ही सामाजिक अत्याचार, हमारी ही कुप्रथाएँ हैं जिन्होने वेश्या का रुप धारण किया है। यह दालमंडी हमारे ही जीवन का कलुंपित प्रतिबिंध, हमारे ही पैशाचिक अधर्म का साक्षात्कार स्वरुप है। हम किस मुँह से उनसे घृणा करें।[4]

वेश्या समस्या का उन्मूलन सामाजिक धारणा में बदलाव से संभव होगा। सामाजिक व्यवस्था व पुरुष और नारी की मनोवृति में आमूल परिवर्तन से ही इस समस्या का समाधान संभव है। वह कहते हैं– "जब तक समाज की व्यवस्था ऊपर से नीचे तक बदल न डाली जाए, इस तरह की मंडली से कोई फायदा न होगा।"[5] वेश्याओं के उद्धार के लिए वे समाज को आह्वान करते हैं– "उनमें कितनी धार्मिक श्रद्धधा, पाप–जीवन से कितनी घृणा, अपने जीवनोद्धार की कितनी अभिलाषा है।" उन्हें केवल एक सहारे की आवश्यकता है जिसे पकड़कर वह बाहर निकल आएँ।" 'वेश्या' कहानी की माधुरी दयाकृष्ण के प्रेम से वंचित होने पर भी अपने वेश्या होने की हीनता और ग्लानि से भर उठती है– "तुम मन से यह स्वीकार नहीं कर रहे हो कि कोई स्त्री स्वेच्छा से रुप का व्यवसाय नहीं करती। पैसे के लिए अपनी लज्जा को उघाड़ना, तुम्हारी समझ में कुछ ऐसे आनंद की बात है, जिसे वेश्या शौक से करती है।"[7]

नारी का शोषण पुरुष अपनी कलुषित मानसिकता के कारण भी करता आ रहा है। पुरुष भी नारी पर निरंतर अत्याचार करता रहा है। अपहृत नारी पुनः पति के घर आती है तो पति भी उसे अस्वीकार करता है। 'निवार्सन' कहानी की मर्यादा को उसका पति परशुराम कहता है–"जिस स्त्री पर दूसरी निगाहें पड़ चुकी, जो एक सप्ताह तक न जाने कहाँ और किस दशा में रही, उसे अंगीकार करना मेरे लिए असंभव है।" तुम्हारा किसी अन्य पुरुष के साथ क्षणभर भी एकांत में रहना, तुम्हारे पातिव्रत के नष्ट करने के लिए बहुत है। यह विचित्र बंधन है, रहे तो जन्म–जन्मांतर तक, टूटे तो क्षण–भर में टूट जाए।"[8]

'वेश्या' कहानी की माधुरी भी पुरुषो के अत्याचार को ही अपनी दुर्गति का कारण मानते हुए कहती है– "नारी अपना बस रहते हुए कभी पैसो के लिए अपने को समर्पित नहीं करती। यदि वह ऐसा कर रही है तो समझ लो उसके लिए और कोई आश्रय, और कोई आधार, नहीं हैं।"[9]

अतः प्रेमचंद जी नारी के शोषित रुप को दिखाते हुए इसके कारण व निवारण के उपाय भी दिए है। यह प्रेमचंद जी के साहित्य का आदर्शवाद से आदर्शोन्मुख यथार्थवाद कद से पूर्ण यथार्थवाद की ओर बढ़ने सफल प्रयास है।

संदर्भ

1. प्रेमचंद, निर्मला, पृ0 29
2. प्रेमचंद, गोदान, पृ0 218
3. प्रेमचंद, निर्मला, पृ0 38–39
4. प्रेमचंद, सेवासदन, पृ0 123
5. प्रेमचंद, गोदान, पृ0 272
6. प्रेमचंद, सेवा सदन, पृ0 211
7. प्रेमचंद, मानसरोवर, भाग–2, पृ0 47
8. प्रेमचंद, मानसरोवर, भाग–3, पृ0 49
9. प्रेमचंद, मानसरोवर, भाग–2, पृ0 49